SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ग्रामोदय और ग्रामीण विकास में सूचना केन्द्रों के रूप में दीनदयाल शोध संस्थान की भूमिका एवं योगदान का अध्ययन

अनुराग शर्मा, शोधार्थी, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, जिला– सतना, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author

अनुराग शर्मा, शोधार्थी

E-mail : anuragsharmabhaiji@yahoo.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 09/08/2025
Revised on : 07/10/2025
Accepted on : 16/10/2025
Overall Similarity : 00% on 08/10/2025

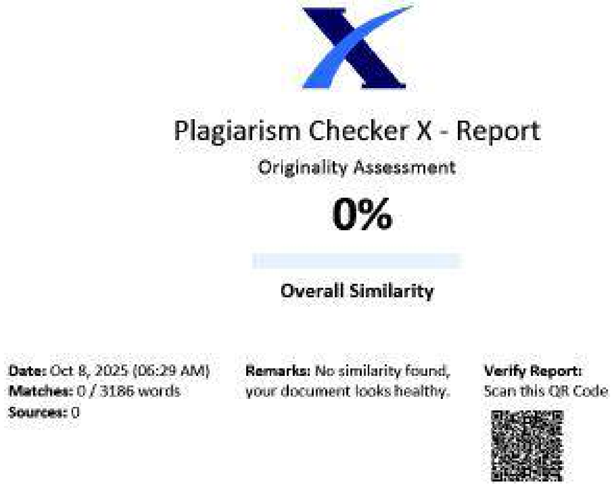

शोध सार

यह शोध–पत्र ग्रामोदय की संकल्पना और ग्रामीण विकास में सूचना केन्द्रों की भूमिका पर केन्द्रित है, विशेषतः दीनदयाल शोध संस्थान (डी.आर.आई) चित्रकूट के योगदान के विश्लेषण के साथ। भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है, अतः राष्ट्र की प्रगति ग्रामीण उत्थान पर निर्भर है। नाना जी देशमुख द्वारा स्थापित डी.आर.आई ने शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्यमिता, कौशल विकास और पुस्तकालयों को ग्रामोदय का आधार बनाकर आत्मनिर्भर ग्राम की परिकल्पना को साकार किया। इस अध्ययन में सूचना केन्द्रों को ग्रामीण समाज में ज्ञान और जागरूकता के लोकतांत्रिक स्रोत के रूप में परिभाषित किया गया है, जो डिजिटल सशक्तिकरण, सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण और सतत् विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने में सहायक हैं। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि डी.आर.आई–चित्रकूट मॉडल सूचना केन्द्रों को शिक्षा, कृषि विज्ञान, उद्यमिता और कौशल विकास से जोड़कर ग्रामीण समुदायों में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन लाने में सफल रहा है। यह अध्ययन सूचना केन्द्रों की चुनौतियों, अवसरों और भविष्य की दिशा पर भी प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द

ग्रामोदय, ग्रामीण विकास, दीनदयाल शोध संस्थान, सूचना केन्द्र, कृषि विज्ञान केन्द्र, सतत विकास लक्ष्य.

प्रस्तावना

भारत एक ग्रामीण प्रधान देश है, जहाँ लगभग 65–70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण समाज का विकास देश की समग्र प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामोदय, या "गाँवों के समग्र

उत्थान" की अवधारणा, केवल भौतिक और आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार, संस्कृति और आत्मनिर्भरता के सतत् विकास को भी समाहित करती है। ग्रामोदय की मूल भावना गांधी और विनोबा भावे के आदर्शों में निहित है, जहाँ प्रत्येक गाँव को स्वावलंबी, सशक्त और सामाजिक दृष्टि से जागरूक बनाने का लक्ष्य रखा गया।

सूचना केन्द्र और पुस्तकालय इस संदर्भ में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। ये न केवल ज्ञान और सूचना का वितरण करते हैं, बल्कि डिजिटल साक्षरता, ई–गवर्नेंस और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से ग्रामीण समाज को सशक्त बनाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में सूचना का अभाव या असमान वितरण अक्सर विकास की बाधा बनता है। ऐसे में सूचना केन्द्रों द्वारा शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य और सामाजिक चेतना से जुड़ी सूचनाओं का समुचित वितरण ग्रामीण समाज की प्रगति को तीव्र करता है।

नाना जी देशमुख द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान (डी.आर.आई), चित्रकूट ने ग्रामोदय की अवधारणा को व्यवहारिक रूप दिया। डी.आर.आई ने न केवल शिक्षा और पुस्तकालय सेवाओं पर ध्यान केंद्रित किया, बल्कि ग्रामीण समाज में कृषि विज्ञान, कौशल विकास और उद्यमिता को भी एकीकृत किया। चित्रकूट KVK (कृषि विज्ञान केंद्र) और कौशल विकास केंद्र डी.आर.आई के अंतर्गत ग्रामीण आजीविका को सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये संस्थाएँ कृषि तकनीकों, फसल प्रबंधन, जल प्रबंधन, उद्यमिता प्रशिक्षण और डिजिटल साक्षरता के माध्यम से ग्रामीण समाज में स्थायी विकास का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

दीनदयाल शोध संस्थान (डी.आर.आई), चित्रकूट की स्थापना

दीनदयाल शोध संस्थान (डी.आर.आई), चित्रकूट की स्थापना वर्ष 1972 में मध्यप्रदेश के चित्रकूट में लोकनायक नाना जी देशमुख द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और स्वदेशी मॉडल के आधार पर समाज का पुनर्निर्माण करना है। संस्था के प्रमुख कार्यक्षेत्रों में ग्रामोदय की अवधारणा, शिक्षा एवं कौशल विकास, स्वास्थ्य तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा, कृषि एवं गोपालन, और स्वरोजगार व ग्रामोद्योग शामिल हैं। डी.आर.आई. की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसने चित्रकूट मॉडल ऑफ़ डेवलपमेंट प्रस्तुत किया, जिसे पूरे देश में ग्रामीण विकास के आदर्श रूप में स्वीकारा गया है। यह संस्था महात्मा गांधी के ''ग्राम स्वराज'' और दीनदयाल उपाध्याय के ''एकात्म मानववाद'' के दर्शन पर आधारित होकर ग्रामीण जीवन को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है।

शोध की पृष्ठभूमि

ग्रामीण विकास और सूचना केन्द्रों पर अध्ययन अनेक देशों में हुए हैं। भारत में कई शोधपत्रों ने पुष्टि की है कि पुस्तकालय और सूचना केन्द्र ग्रामीण शिक्षा स्तर, कृषि उत्पादकता, स्वास्थ्य और सामाजिक चेतना में वृद्धि करते हैं। ICT आधारित सेवाओं और डिजिटल सूचना नेटवर्क ग्रामीण समाज को आधुनिक ज्ञान तक पहुँचाने में सहायक हैं।

चित्रकूट कृषि विज्ञान केंद्र और डी.आर.आई मॉडल ग्रामीण विकास का एक विशिष्ट उदाहरण है। KVK, किसानों को कृषि तकनीक, बीज और जल प्रबंधन पर प्रशिक्षण प्रदान करता है। डी.आर.आई के स्वास्थ्य और आयुर्वेदिक मॉडल ग्रामीणों को सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं। इसके अलावा, उद्यमिता और कौशल विकास केंद्र ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को स्वरोजगार, स्टार्टअप और व्यवसाय प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सूचना केन्द्र केवल "सूचना के वितरण केंद्र" नहीं हैं, बल्कि ग्रामोदय की आत्मा हैं। ये शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार और सामाजिक चेतना के माध्यम से गाँवों को सशक्त बनाते हैं। विशेषकर चित्रकूट क्षेत्र में डी.आर.आई की पहल ने ग्रामोदय की अवधारणा को व्यवहारिक और परिणाम मुखी रूप में प्रस्तुत किया है।

उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह है किः

1. ग्रामोदय और ग्रामीण विकास में सूचना केन्द्रों की भूमिका का विश्लेषण किया जाए।
2. डी.आर.आई चित्रकूट मॉडल के माध्यम से ग्रामीण शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, उद्यमिता और कौशल विकास के प्रभाव को समझा जाए।
3. ग्रामीण समाज में सूचना केन्द्रों द्वारा उत्पन्न सामाजिक और आर्थिक लाभ का मूल्यांकन किया जाए।
4. भविष्य में नीति और योजना निर्माण के लिए सुझाव प्रस्तुत किए जाएँ।

ग्रामोदय की संकल्पना

ग्रामोदय का शाब्दिक अर्थ है "गाँवों का उत्थान"। यह अवधारणा केवल भौतिक या आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और आत्मनिर्भरता के आयामों को भी समाहित करती है। गाँधी और विनोबा भावे ने ग्रामों की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था, स्थानीय संसाधनों के संरक्षण और सामाजिक न्याय पर बल दिया। ग्रामोदय की दृष्टि में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार और सामाजिक चेतना सभी एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

नाना जी देशमुख ने दीनदयाल शोध संस्थान (डी.आर.आई), चित्रकूट के माध्यम से ग्रामोदय को व्यवहारिक रूप दिया। उनका दृष्टिकोण था कि गाँवों का वास्तविक उत्थान तब होगा जब ग्रामीण आत्मनिर्भर, शिक्षित और सामाजिक दृष्टि से जागरूक होंगे। सूचना केन्द्र, पुस्तकालय, कौशल विकास और कृषि विज्ञान केन्द्र (KVK) इस दृष्टि को साकार करने के प्रमुख उपकरण हैं।

सूचना केन्द्रों और ग्रामीण विकास पर शोध

1. **शिक्षा और पुस्तकालयः** अनेक शोधों से पता चला है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और सूचना की पहुँच बढ़ाने में सूचना केन्द्रों का योगदान महत्त्वपूर्ण है। पुस्तकालय ग्रामीण समाज में ज्ञान और सूचना के लोकतांत्रिक स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।

- ➢ बाल और युवाओं में सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- ➢ प्रतियोगी परीक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए डिजिटल और प्रिंट संसाधन उपलब्ध कराना।
- ➢ महिला शिक्षा और साक्षरता में सुधार करना।

2. **कृषि और कृषि विज्ञान केंद्रः** कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) मॉडल ग्रामीण किसानों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है। कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएँः

- ➢ उन्नत बीज, फसल विविधता और उत्पादन तकनीक।
- ➢ मौसम और जल प्रबंधन संबंधित सूचना।
- ➢ बाजार भाव और विपणन रणनीति।
- ➢ प्रशिक्षण कार्यशालाएँ और डेमो फॉर्म।

कृषि विज्ञान केंद्र, चित्रकूट ग्रामीण किसानों को कृषि संबंधी नवीनतम तकनीक और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण प्रदान करता है। इससे किसान उत्पादन और आय में सुधार करते हैं, साथ ही सतत् कृषि और पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलता है।

3. **स्वास्थ्य और जन–जागरूकताः** सूचना केन्द्र ग्रामीण स्वास्थ्य और पोषण पर भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। डी.आर.आई ने चित्रकूट में आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा आधारित स्वास्थ्य कार्यक्रम संचालित किए हैं।

- ➢ प्राथमिक स्वास्थ्य सूचना, टीकाकरण और स्वच्छता जागरूकता।
- ➢ मातृ और शिशु स्वास्थ्य सुधार।

- स्थानीय जड़ी–बूटियों और आयुर्वेदिक उपचार की शिक्षा।

4. **उद्यमिता और कौशल विकासः** ग्रामीण समाज में स्वरोजगार और उद्यमिता बढ़ाने के लिए कौशल विकास और प्रशिक्षण आवश्यक हैं। क्त्‍ और उसके केंद्र ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को व्यवसायिक प्रशिक्षण, डिजिटल कौशल और स्टार्टअप योजना में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

- स्वरोजगार और स्वयं सहायता समूह (SHG) के माध्यम से महिलाओं की भागीदारी।
- स्थानीय उत्पाद और सेवा विकास।
- कौशल विकास केंद्र द्वारा ट्रेड, आईटी, और कृषि आधारित प्रशिक्षण।

5. **डिजिटल साक्षरता और ई–गवर्नेंसः** सूचना केन्द्र डिजिटल इंडिया के लक्ष्य को साकार करने में भी योगदान देते हैं।

- डिजिटल साक्षरता और ICT प्रशिक्षण।
- ई–गवर्नेंस, सरकारी योजनाओं और ऑनलाइन सेवाओं की जानकारी।
- सूचना के डिजिटल वितरण और डेटा प्रबंधन।
- चित्रकूट / डी.आर.आई मॉडल का महत्व

चित्रकूट क्षेत्र में डी.आर.आई ने ग्रामोदय की अवधारणा को व्यवहारिक रूप में लागू किया है। यहाँ सूचना केन्द्र केवल "ज्ञान वितरण केंद्र" नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण समाज को सशक्त बनाने, आत्मनिर्भर बनाने और सामाजिक चेतना विकसित करने का कार्य करते हैं।

- KVK किसानों को कृषि ज्ञान, प्रौद्योगिकी और बाजार सूचना उपलब्ध कराता है।
- स्वास्थ्य केंद्र ग्रामीणों को आयुर्वेद और प्राथमिक स्वास्थ्य की जानकारी देते हैं।
- कौशल विकास केंद्र और उद्यमिता कार्यक्रम युवाओं और महिलाओं को स्वरोजगार और व्यापारिक प्रशिक्षण देते हैं।
- पुस्तकालय और डिजिटल सूचना केन्द्र ग्रामीणों को शिक्षा, रोजगार और सामाजिक निर्णयों में सशक्त बनाते हैं।

डी.आर.आई–चित्रकूट मॉडल ने यह दिखाया है कि सूचना केन्द्र ग्रामोदय की आत्मा हैं। ये केंद्र ग्रामीण समाज को केवल जानकारी नहीं देते, बल्कि उसे सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाते हैं।

अनुसंधान अंतराल

वर्तमान शोध और केस–स्टडी के आधार पर कुछ अंतराल पाए गए हैं:

1. **दीर्घकालिक प्रभाव का अध्ययनः** 5–10 वर्षों बाद सूचना केन्द्रों के प्रभाव को मापना।
2. **तुलनात्मक अध्ययनः** अन्य राज्यों और परियोजनाओं से तुलना।
3. **लैंगिक और सामाजिक समावेशनः** महिलाओं, पिछड़ी जातियों और अल्पसंख्यकों की भागीदारी।
4. **आर्थिक और वित्तीय स्थिरताः** सूचना केन्द्रों के स्थायी संचालन के लिए मॉडल।

दीनदयाल शोध संस्थान (डी.आर.आई) और ग्रामोदय मॉडल

दीनदयाल शोध संस्थान (डी.आर.आई), चित्रकूट का उद्देश्य ग्रामों में समग्र विकास और आत्मनिर्भरता स्थापित करना है। डी.आर.आई ने ग्रामोदय की अवधारणा को व्यावहारिक रूप में लागू करने के लिए पंचमुखी विकास मॉडल अपनाया है:

1. शिक्षा और पुस्तकालय सेवाएँ।

2. कृषि और आजीविका विकास।
3. स्वास्थ्य और पोषण।
4. कौशल विकास और उद्यमिता।
5. सामाजिक और सांस्कृतिक संरक्षण।

इस मॉडल में सूचना केन्द्र, पुस्तकालय, KVK, कौशल विकास केंद्र और उद्यमिता प्रशिक्षण केंद्र प्रमुख उपकरण हैं। ये संस्थाएँ गाँवों में ज्ञान, सूचना और प्रशिक्षण के माध्यम से समाज को सशक्त बनाने का कार्य करती हैं।

सूचना केन्द्रों की भूमिका

सूचना केन्द्र ग्रामीण विकास में ज्ञान और सूचना का पुल (Bridge of Information) बनते हैं। ये केंद्र शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार और डिजिटल साक्षरता से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन करते हैं।

- **शिक्षाः** सूचना केन्द्र ग्रामीण युवाओं और बच्चों को अध्ययन सामग्री, डिजिटल संसाधन और प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। महिलाओं की शिक्षा और साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं।
- **स्वास्थ्य और पोषणः** सूचना केन्द्र स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता अभियान संचालित करते हैं, जैसे टीकाकरण, स्वच्छता, मातृ और शिशु स्वास्थ्य। डी.आर.आई के आयुर्वेदिक कार्यक्रम ग्रामीणों को प्राकृतिक औषधियों और स्थानीय जड़ी–बूटियों के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- **कृषि और कृषि विज्ञान केंद्र (KVK)**
  - KVK, डी.आर.आई के अंतर्गत, किसानों को कृषि विज्ञान और तकनीक से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान करता है।
  - उन्नत बीज और फसल तकनीक।
  - जल प्रबंधन और सिंचाई प्रशिक्षण।
  - बाजार और विपणन रणनीति।
  - प्रदर्शनी और डेमो फार्म।

KVK के माध्यम से किसान न केवल उत्पादन बढ़ाते हैं बल्कि आय में स्थिरता भी प्राप्त करते हैं।

कौशल विकास केंद्र और उद्यमिता

ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को स्वरोजगार और उद्यमिता के लिए प्रशिक्षण देने में कौशल विकास केंद्र महत्त्वपूर्ण हैं। ये केंद्र व्यवसायिक प्रशिक्षण, IT, ट्रेड और कृषि आधारित कौशल प्रदान करते हैं।

उद्यमिता प्रशिक्षण

- स्वयं सहायता समूह (SHG) के माध्यम से महिला उद्यमिता को बढ़ावा देना।
- ग्रामीण युवाओं को स्टार्टअप और स्थानीय व्यवसाय के लिए मार्गदर्शन।
- उत्पादकता, विपणन और वित्तीय प्रबंधन पर प्रशिक्षण।

कौशल विकास

कौशल विकास केंद्र डिजिटल साक्षरता, व्यापार प्रबंधन, स्थानीय तकनीकी प्रशिक्षण और रोजगार सृजन के कार्यक्रम संचालित करते हैं। इससे ग्रामीण समाज में आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण बढ़ता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक संरक्षण

डी.आर.आई के सूचना केन्द्र और पुस्तकालय केवल ज्ञान केंद्र नहीं हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में भी योगदान करते हैं।

- लोककला और लोकगीत का अभिलेखन।
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन।
- स्थानीय परंपराओं और ज्ञान का संरक्षण।

इससे ग्रामीण समाज में सांस्कृतिक चेतना बढ़ती है और समुदायिक एकता मजबूत होती है।

डिजिटल सशक्तिकरण और ई–गवर्नेंस

डी.आर.आई और इसके सूचना केन्द्र डिजिटल इंडिया और ई–गवर्नेंस की दिशा में ग्रामीण समाज को जोड़ते हैं।

- ग्रामीणों को डिजिटल सेवाओं और सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान करना।
- ई–गवर्नेंस और ऑनलाइन आवेदन की सुविधा।
- डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण, ICT उपकरण और इंटरनेट का उपयोग।

इन सेवाओं के माध्यम से ग्रामीण समाज में सूचना का समुचित वितरण सुनिश्चित होता है और सामाजिक निर्णय अधिक सशक्त बनते हैं।

चित्रकूट मॉडलः एक व्यावहारिक उदाहरण

चित्रकूट क्षेत्र में डी.आर.आई और कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा संचालित कार्यक्रम निम्नलिखित परिणाम दिखाते हैं:

1. **कृषि उत्पादकता में वृद्धिः** किसानों ने उन्नत तकनीक अपनाकर उत्पादन बढ़ाया।
2. **आजीविका और उद्यमिताः** युवाओं और महिलाओं द्वारा स्वरोजगार और छोटे व्यवसाय शुरू किए गए।
3. **शिक्षा और सूचना साक्षरताः** बाल और युवाओं में अध्ययन की प्रवृत्ति और डिजिटल साक्षरता में वृद्धि।
4. **स्वास्थ्य और पोषण में सुधारः** टीकाकरण, स्वच्छता और आयुर्वेदिक उपचार से स्वास्थ्य स्तर बेहतर हुआ।
5. **सांस्कृतिक संरक्षण** लोककला, गीत और परंपराओं का संकलन और प्रदर्शन।

ग्रामीण सूचना केन्द्रों की चुनौतियाँ

ग्रामीण सूचना केन्द्रों और डी.आर.आई जैसे मॉडल के कार्यान्वयन में अनेक चुनौतियाँ सामने आती हैं:

1. **संसाधन और वित्तीय सीमाएँः** ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी और पर्याप्त वित्तीय संसाधन न होने के कारण सूचना केन्द्रों का संचालन और विस्तार कठिन होता है। पुस्तकालयों, ICT उपकरणों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए बजट की कमी एक प्रमुख बाधा है।
2. **तकनीकी असमानता और डिजिटल विभाजनः** ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की पहुँच, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और तकनीकी प्रशिक्षण की कमी डिजिटल साक्षरता और ई–गवर्नेंस को सीमित करती है।
3. **प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमीः** सूचना केन्द्र, कौशल विकास और उद्यमिता प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी अक्सर कार्यक्रमों के प्रभाव को कम कर देती है।
4. **नीति और प्रशासनिक अड़चनेंः** सरकारी योजनाओं और नीतियों का विलंब, गैर–समन्वयित प्रशासन और स्थानीय स्तर पर नीति क्रियान्वयन की बाधाएँ सूचना केन्द्रों की कार्यक्षमता को प्रभावित करती हैं।

अवसर और विकास की संभावनाएँ

इन चुनौतियों के बावजूद, भविष्य में ग्रामीण सूचना केन्द्रों के लिए अनेक अवसर हैं:

1. **डिजिटल इंडिया और ICT विस्तार:** ग्रामीण क्षेत्र में इंटरनेट, मोबाइल एप्लिकेशन और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से सूचना पहुँचाने के नए अवसर उपलब्ध हैं।
2. **सतत् विकास लक्ष्यों (SDGs) का समावेश:** SDGs जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, लिंग समानता, जल और स्वच्छता, सतत् आर्थिक वृद्धि को सूचना केन्द्र अपने कार्यक्रमों में शामिल कर सकते हैं।
3. **उद्यमिता और कौशल विकास के अवसर:** ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को स्वरोजगार, स्टार्टअप और छोटे व्यवसाय के लिए प्रशिक्षण प्रदान कर उनके आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा सकता है।
4. **सामुदायिक भागीदारी और लोकसहयोग:** ग्राम पंचायत, स्वयं सहायता समूह (SHG) और स्थानीय समुदाय के सहयोग से सूचना केन्द्रों की प्रभावशीलता और स्थायित्व बढ़ाया जा सकता है।

भविष्य की दिशा (Vision 2047)

विकसित भारत 2047 की परिकल्पना में सूचना केन्द्र प्रमुख भूमिका निभाएँगे। इसके मुख्य आयाम हैं:

1. **आजीवन अधिगम और शिक्षा:** सूचना केन्द्र शिक्षा का केंद्र बनेंगे, जहाँ ग्रामीण बच्चे, युवा और महिलाएँ लगातार नई जानकारी, कौशल और प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।
2. **डिजिटल समावेशन:** डिजिटल साक्षरता और ICT आधारित सेवाओं के माध्यम से ग्रामीण समाज को आधुनिक तकनीक से जोड़ना।
3. **कृषि और उद्यमिता विकास:** KVK और कौशल विकास केंद्र के माध्यम से कृषि तकनीक, बाजार जानकारी और व्यवसायिक प्रशिक्षण ग्रामीणों तक पहुँचाना।
4. **सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण:** लोककला, संगीत, परंपराएँ और सांस्कृतिक ज्ञान को संरक्षित करते हुए ग्रामीण समाज में सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाना।
5. **स्वास्थ्य और जीवन गुणवत्ता में सुधार:** आयुर्वेदिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, पोषण और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करना।

निष्कर्ष

ग्रामोदय और ग्रामीण विकास में सूचना केन्द्रों का योगदान अतुलनीय और बहुआयामी है। दीनदयाल शोध संस्थान (डी.आर.आई), चित्रकूट द्वारा संचालित मॉडल ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सूचना केन्द्र केवल ज्ञान और सूचना के वितरण केंद्र नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण समाज के शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्यमिता और सामाजिक चेतना का प्रमुख आधार हैं।

डी.आर.आई. और चित्रकूट कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से ग्रामीण समाज में शिक्षा का स्तर, कृषि उत्पादकता, स्वास्थ्य व पोषण स्थिति और कौशल विकास में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया है। सूचना केन्द्र और पुस्तकालय बच्चों, युवाओं और महिलाओं के लिए शैक्षिक और व्यवसायिक अवसर उपलब्ध कराते हैं। कौशल विकास केंद्र और उद्यमिता प्रशिक्षण के माध्यम से ग्रामीण युवा और महिलाएँ स्वरोजगार और छोटे व्यवसाय स्थापित कर आर्थिक सशक्तिकरण प्राप्त कर रहे हैं।

डिजिटल साक्षरता और ई–गवर्नेंस की दिशा में भी सूचना केन्द्रों का योगदान सराहनीय है। ग्रामीण समाज अब डिजिटल सेवाओं और सरकारी योजनाओं तक आसानी से पहुँच पा रहा है। साथ ही सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में भी सूचना केन्द्रों की भूमिका महत्वपूर्ण है, जिससे ग्रामीण समाज में सांस्कृतिक जागरूकता और सामुदायिक एकता मजबूत होती है।

हालाँकि, ग्रामीण सूचना केन्द्रों के समक्ष संसाधन, तकनीकी असमानता, प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी और नीति संबंधी चुनौतियाँ भी हैं लेकिन डिजिटल इंडिया पहल, ग्रामोदय योजनाएँ, सामुदायिक भागीदारी और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के संदर्भ में अवसर अत्यधिक हैं। यदि इन अवसरों का प्रभावी उपयोग किया जाए तो सूचना केन्द्र ग्रामीण समाज को 2047 तक आत्मनिर्भर, सशक्त और समावेशी बनाने में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सूचना केन्द्र ग्रामोदय की आत्मा हैं। वे न केवल ग्रामीणों तक ज्ञान पहुँचाते हैं, बल्कि उन्हें आधुनिक समाज और वैश्विक ज्ञान से जोड़ते हुए ग्रामीण विकास के सतत् मॉडल को साकार करते हैं। डी.आर.आई –चित्रकूट मॉडल एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार शिक्षा, कृषि, कौशल, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक संरक्षण को एकीकृत करके ग्रामोदय की अवधारणा को व्यवहारिक रूप दिया जा सकता है।

अतः नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और विकास कार्यकर्ताओं के लिए यह स्पष्ट है कि सूचना केन्द्रों का सुदृढ़ीकरण, वित्तीय और तकनीकी सहयोग, प्रशिक्षण और डिजिटल विस्तार ग्रामीण समाज के समग्र विकास और भारत के सतत् भविष्य के लिए अनिवार्य हैं।

संदर्भ सूची

1. चित्रकूट कृषि विज्ञान केंद्र, https://chitrakoot.kvk4.in/about-us.php, Accessed on 25/07/2025.
2. देशमुख, नाना जी (1998) *ग्रामोदय से राष्ट्रोदय तक,* दीनदयाल अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली।
3. विश्व बैंक (2020) *भारत में ग्रामीण विकास और सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव,* विश्व बैंक प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. Singh, P. (2021) Krishi Vigyan Kendra and sustainable agricultural development: A case study of Chitrakoot, *Indian Journal of Rural Development,* 29(2) 101-118.
5. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (2019) सतत् विकास लक्ष्य और भारत, यूएनडीपी, नई दिल्ली।
6. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (2021) *कृषि विज्ञान केन्द्रः ग्रामीण विकास की धुरी,* आईसीएआर, नई दिल्ली।
7. Deshmukh, N. (1995) *Gandhian philosophy and rural upliftment,* Bharatiya Vidya Prakashan, Pune.
8. Pandey, S. & Tiwari, K. (2020) Digital inclusion in rural India: Role of information centers, *International Journal of Information Dissemination and Technology,* 10(1) 25–36.

****